खबरों को लेकर कम्युनिटी जर्नलिस्ट का बढ़ रहा दायरा

महिला समूह से जुड़ी महिलाओं को देश-दुनिया से अवगत कराने और उन्हें अपने आसपास की तमाम घटनाओं व बदलावों को समझने के लिए कम्युनिटी जर्नलिस्ट का प्रशिक्षण दिया गया था. इसके बाद से ही वो अपने समूह और समूह की महिलाओं की जिंदगी में आ रहे बदलाव को लेकर लगातार लिख रही हैं. इससे उनकी सोच का दायरा बढ़ रहा है. पहले महिलाएं सिर्फ समूह से जुड़ी खबरें ही लिखती थीं, लेकिन अब अपने आसपास हो रहे बदलाव को भी लिखने लगी हैं. किस तरीके से बदलाव हो रहा है, इसे भी समझने लगी हैं. मॉडल आंगनबाड़ी की कहानी हो या स्कूल अपग्रेड होने की खबर या फिर शराबबंदी को लेकर चलाया गया अभियान. इन सभी के बारे में अब ये महिलाएं लिखने लगी हैं. इन महिलाओं ने साबित कर दिया है कि सही राह दिखायी जाये, तो वो भी किसी से कम नहीं हैं.

शराबबंदी को लेकर महिलाओं ने निकाली रैली

शराब के खिलाफ रैली निकालतीं महिलाएं.

रूबी खातून

प्रखंड : अनगड़ा
जिला : रांची

राजधानी रांची के अनगड़ा प्रखंड अंतर्गत सिरका पंचायत से महेशपुर आजीविका महिला ग्राम संगठन और सिरका आजीविका महिला ग्राम संगठन की महिलाओं ने शराबबंदी की मांग को लेकर संयुक्त रूप से जागरूकता रैली निकाली. रैली के माध्यम से ग्रामीणों को शराब का सेवन नहीं करने के लिए जागरूक किया गया. साथ ही शराब से होनेवाले शारीरिक, आर्थिक और सामाजिक दुष्परिणाम की जानकारी भी दी. रैली के दौरान महिलाओं के हाथों में शराब विरोधी नारे लिखी तख्तियां थीं. इस दौरान महिलाओं ने शीशा बोतल तोड़ दो, दारू पीना छोड़ दो जैसे नारे भी लगाये. महेशपुर आजीविका ग्राम संगठन की अध्यक्ष सना खातून ने कहा कि शराब के नशे के कारण कई ग्रामीणों की मौत भी हो चुकी है. शराब के कारण महिलाओं को घरेलू हिंसा का सामना भी करना पड़ता है. लड़ाई-झगड़े समेत कई समस्याएं खड़ी होती हैं. इसलिए पंचायत में शराबबंदी को लेकर लोगों को जागरूक किया जा रहा है, ताकि लोग जागरूक हों और शराब पर रोक लगे. महेशपुर आजीविका ग्राम संगठन की कोषाध्यक्ष सह महेशपुर पंचायत की उपमुखिया जसमीन खातून बतायी हैं कि पंचायत को नशामुक्त बनाने के लिए हम सब काम करेंगे. इस कार्य में ग्राम संगठन की सदस्यों का भी पूरा सहयोग मिल रहा है. ग्राम संगठन की बैठक में भी शराबबंदी को लेकर चर्चा होती है. शराब के मामले ज्यादा आते हैं, जिसके कारण कई परिवार गरीबी से बाहर नहीं निकल पा रहे हैं. हमारी कोशिश है कि गांव में शराब की बिक्री बंद की जाये. इसके लिए अनगड़ा पुलिस का भी सहयोग मिल रहा है. सिरका आजीविका महिला ग्राम संगठन की अध्यक्ष रूमा देवी ने बताया कि शराब के कारण महिलाएं विधवा हो रही हैं. शराब का सेवन करनेवाले घर में घरेलू हिंसा होना आम बात है. इससे बच्चों पर गहरा प्रभाव पड़ता है. उनकी परवरिश अच्छी से नहीं हो पाती है. उनकी पढ़ाई-लिखाई पर भी असर पड़ता है. महेशपुर आजीविका ग्राम संगठन की सदस्य शहनाज खातून ने कहा कि हम सभी महिलाएं शराब के खिलाफ एकजुट हुए हैं. समाज से इस बुराई को हटा कर रहेंगे. रैली में शामिल सभी महिलाओं ने शराबबंद करने का संकल्प दोहराया.

अब लकड़ी नहीं चुनतीं मालती देवी

सुशीला देवी

प्रखंड : तांतनगर
जिला : पश्चिमी सिंहभूम

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत तांतनगर पंचायत के अंगरडीहा गांव की मालती देवी को अब लकड़ी चुनने के लिए अपने बच्चों को छोड़कर जंगल में नहीं जाना पड़ता है. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के जरिये उन्हें अब जंगल जाने और धुएं में खाना बनाने से आजादी मिल गयी है. वर्ष 2015 में रोशनी महिला समूह में सदस्य के तौर पर जुड़ने के बाद उन्हें इस योजना का लाभ मिला है. मालती देवी के परिवार में छह सदस्य हैं. इतने परिवारों का खाना लकड़ी के चूल्हे पर बनाना पहले इतना आसान काम नहीं था. धुएं से रसोईघर में रहना मुश्किल हो जाता था. समय पर खाना भी नहीं बन पाता था, पर गैस सिलिंडर मिलने के बाद उनके लिये यह काम काफी आसान हो गया है. बहुत कम समय में वो खाना बनाकर अपने बच्चों को काम पर भेज देती हैं. पति की मौत के बाद वो काफी तंगहाली में अपना जीवन बीता रही थीं, लेकिन अब उनकी जिंदगी में सुधार आ रहा है. मालती देवी बताती हैं कि अगर वो महिला समूह से नहीं जुड़तीं, तो उनके जीवन में यह बदलाव नहीं आता.

समूह से आत्मनिर्भर बन रहीं वीणा देवी

अमिता देवी

प्रखंड : रनिया
जिला : खूंटी

खूंटी जिले के रनिया प्रखंड अंतर्गत तांबा पंचायत के बेलसियागढ़ गांव की वीणा देवी की जिंदगी समूह से जुड़कर बदल रही है. अपनी दुकान खोलकर वो आत्मनिर्भर हो रही हैं और घर चलाने में पति का सहयोग भी कर रही हैं. उनकी जिंदगी में यह बदलाव वर्ष 2018 में आया, जब वो फिमेल आजीविका महिला समूह से जुड़ी थीं. समूह से जुड़ने से पहले उनकी माली हालत बेहद खराब थी. पैसे कमाने का कोई साधन नहीं था. इस कारण पति जम्मू में रहकर मजदूरी करते थे. जम्मू से कुछ पैसे कमा कर उनके पति ने घर बनाया. थोड़ा-बहुत खुद के पैसे और समूह से 10 हजार रुपये लोन लेकर एक छोटी-सी दुकान खोली. इसके साथ ही वीणा देवी समूह में सक्रिय महिला के तौर पर भी काम करती हैं. वीणा दुकान चलाती हैं और उनके पति मजदूरी करते हैं. दुकान से दिनभर में 500 रुपये की आमदनी हो जाती है. अब वो फिर समूह से लोन लेकर दुकान को आगे बढ़ाना चाहती हैं.

सिलाई से रफ्तार पकड़ी जिंदगी

ममता देवी

प्रखंड : मेदिनीनगर
जिला : पलामू

पलामू जिला अंतर्गत मेदिनीनगर प्रखंड के सुवा गांव की रहनेवाली मनन कुमारी की जिंदगी अब बदल गयी है. सिलाई मशीन के सहारे अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर रही हैं. 18 साल की उम्र में उनकी शादी हो गयी थी. शादी के बाद उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखी और एमए तक की पढ़ाई पूरी की. वर्ष 2013 में उसकी एक बेटी हुई, लेकिन बेटी के जन्म के छह महीने बाद ही उनके पति का एक्सीडेंट हो गया और इलाज के दौरान उनकी मौत हो गयी. पति की मौत के बाद ससुराल वालों ने इन्हें घर से निकाल दिया. इसके बाद वो अपने मायके में आकर रहने लगीं. किस्मत और अपनों के धोखे के बाद भी मनन ने हिम्मत नहीं हारी. गांव के छोटे-छोटे बच्चों को पढ़ाने लगीं. फिर डेढ़ साल बाद पंचायत की सखी मंडल की दीदियों की सलाह पर 2016 में तुलसी आजीविका स्वयं सहायता समूह में बुककीपर के तौर पर जुड़ीं. कुछ महीने बाद सिलाई-बुनाई का छह माह का प्रशिक्षण लिया. सिलाई सीखने के बाद उन्होंने समूह से पांच हजार रुपये का लोन लेकर सिलाई मशीन खरीदी और छोटी-सी दुकान खोल कर कपड़ा सिलाई का काम शुरू किया. शुरू में कपड़े कम आते थे, पर अब सिलाई करके महीने में पांच से छह हजार रुपये कमा लेती हैं. इस पैसे से उन्होंने अपना लोन चुका दिया है और बेटी को अच्छे स्कूल में पढ़ा रही हैं.

ब्यूटी पार्लर से नेहा की बदली जिंदगी

सुषमा कुमारी

प्रखंड : सदर
जिला : हजारीबाग

हजारीबाग जिला अंतर्गत सदर प्रखंड की सिलवार कला पंचायत के सिलवारकला गांव की नेहा ने समूह से जुड़ कर अपने हुनर की बदौलत अपनी पहचान बनायी है. अपना ब्यूटी पार्लर खोल कर नेहा आगे बढ़ रही हैं. समूह से जुड़ने से पहले उनकी स्थिति बेहद दयनीय थी. ब्यूटी पार्लर का काम जानने के बावजूद वो अपने पैरों पर खड़ा नहीं हो पा रही थीं. इस बीच उनके गांव में जेएसएलपीएस द्वारा महिला समूह का गठन किया गया. नेहा भी श्री आजीविका समूह से जुड़ गयीं. जब समूह को बैंक से एक लाख रुपये का लोन मिला, तब उन्होंने समूह से हजार रुपये लोन लेकर अपने घर में एक ब्यूटी पार्लर खोलीं. गांव में ब्यूटी पार्लर नहीं होने के कारण महिलाओं को गांव के बाहर जाना पड़ता था, पर अब गांव में ब्यूटी पार्लर खुल जाने से उन्हें भी आसानी हुई. इससे नेहा को भी फायदा हुआ. उनकी आमदनी में बढ़ोतरी हुई. ब्यूटी पार्लर से नेहा हर महीने सात हजार रुपये तक कमा लेती हैं, जिससे वो समय से अपना लोन भी चुका रही हैं और अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन जी रही हैं. कहती हैं कि अगर किसी का सहारा मिले और कुछ करने की जज्बा हो, तो कोई भी राह मुश्किल नहीं है. मैंने भी इसी को आधार बनाया और आज अपने पैरों पर खड़ी हूं.

सरइडीह में शुरू हुई इंटर की पढ़ाई

शबनम खातून

प्रखंड : बरवाडीह
जिला : लातेहार

लातेहार प्रखंड के बरवाडीह प्रखंड अंतर्गत सरइडीह पंचायत के सरइडीह गांव स्थित उत्क्रमित उच्च विद्यालय में इंटर की पढ़ाई शुरू करने संबंधी शिक्षा सचिव ने पत्र निर्गत कर दिया है. पत्र निर्गत करने के बाद उत्क्रमित उच्च विद्यालय में आर्ट्स, साइंस और कॉमर्स तीनों संकाय की पढ़ाई शुरू हो गयी है. साइंस और कॉमर्स के लिए 128-128 सीट और आर्ट्स के लिए 200 सीटें तय की गयी हैं. विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा मिले, इसके लिए हर विषय के शिक्षक नियुक्त किये गये हैं. प्रिंसिपल ने बताया कि भवन में पहले से बने कमरों का इस्तेमाल विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए किया जा रहा है. इसके साथ ही नया भवन भी बनाया जा रहा है, जो विद्यार्थी इस विद्यालय से 10वीं पास कर रहे हैं, उन्हें वहीं पर नामांकन कराने के लिए प्रेरित किया जा रहा है. शिक्षक अख्तर अंसारी ने बताया कि अब साइंस और कॉमर्स की पढ़ाई करने में छात्रों को पैसों की बचत होगी. इंटर की पढ़ाई शुरू हो जाने के बाद गांव के विद्यार्थियों को काफी राहत मिली है. विद्यार्थियों ने कहा कि पहले इंटर की पढ़ाई के लिए या तो सोचना पड़ता था या फिर यहां से काफी दूर जाना पड़ता था. इस कारण कई विद्यार्थी इंटर की पढ़ाई ही नहीं कर पाते थे. लेकिन, अब यहां इंटर की पढ़ाई शुरू होने से विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने में परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी.

जन-जागृति कार्यक्रम आयोजित

प्रीति गुप्ता

प्रखंड: सतबरवा
जिला: पलामू

पलामू जिले के सतबरवा प्रखंड अंतर्गत सतबरवा पंचायत के राजकीयकृत कन्या मध्य विद्यालय में पोषण माह और स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के तहत जन-जागृति कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में सखी मंडल की महिलाएं, जलसहिया एवं विद्यालय की छात्राओं ने भाग लिया. कार्यक्रम में सही पोषण न लेने की वजह से होनेवाली बीमारियां जैसे- एनीमिया, कुपोषण आदि के बारे में बताया गया. साथ ही लोगों को संतुलित आहार (तिरंगा भोजन) के बारे में भी बताया गया और उसका सेवन करने के लिए प्रेरित किया गया. किशोरियों एवं महिलाओं को आयरन युक्त सब्जियों का सेवन करने के लिए प्रोत्साहित किया गया, क्योंकि अधिकतर महिलाएं एनीमिया से पीड़ित होती हैं. स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के तहत लोगों को शौचालय का नियंत्रण प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया गया. सिंगल यूज प्लास्टिक और प्लास्टिक की थैली का उपयोग नहीं करने के लिए सभी को प्रेरित किया गया. पर्यावरण हानि के लिए प्लास्टिक काफी हद तक जिम्मेदार है. इस कारण इससे दूर रहें. कार्यक्रम में सभी ने अपने हिस्से का योगदान दे कर पर्यावरण को प्लास्टिक तथा कचरा मुक्त बनाने का संकल्प लिया. अगर छोटी-छोटी बातों को ध्यान में रखा जाये, तो न सिर्फ खुद स्वस्थ रहेंगे, बल्कि आसपास भी साफ-सुथरा रहेगा.

खेल-खेल में पढ़ाई कर रहे आंगनबाड़ी के नन्हे-नन्हे बच्चे

आंगनबाड़ी केंद्र में पढ़ते बच्चे.

आशा तिग्गा

प्रखंड : मनोहरपुर
जिला : पश्चिमी सिंहभूम

पश्चिमी सिंहभूम जिला अंतर्गत मनोहरपुर प्रखंड के तिरला गांव में बच्चे खेल-खेल में पढ़ाई कर रहे हैं. तिरला गांव स्थित आंगनबाड़ी में गांव के 30 बच्चे पढ़ते हैं. यहां पढ़नेवाले सभी बच्चों की उम्र तीन से छह वर्ष के बीच की है. आंगनबाड़ी केंद्र में बच्चों को अच्छी शिक्षा के साथ पौष्टिक आहार भी दिया जाता है, हालांकि पहले यहां के आंगनबाड़ी केंद्र में इतनी सुविधाएं मौजूद नहीं थीं. यहां पर सुविधाओं का अभाव था, लेकिन कुछ समय बाद वेदांता कंपनी ने तिरला आंगनबाड़ी केंद्र का रंग- रोगन कराया. अब देखने में यह बहुत सुंदर दिखता है. इसके बाद आंगनबाड़ी केंद्र में बच्चों के बैठने के लिए छोटी कुर्सियां और टेबल लगाये गये. बच्चों को लुभाने वाली पुस्तकें और खेल के माध्यम से बच्चों को पढ़ाने वाली वस्तुएं लायी गयीं. इतना ही नहीं, बच्चों के लिए यूनिफॉर्म और जूते की भी व्यवस्था की गयी, ताकि बच्चे हर रोज आंगनबाड़ी केंद्र में आयें और उनकी रुचि बनी रहे. आंगनबाड़ी को मॉडल बनाने से यह फायदा हुआ है कि अब बच्चे पहले की अपेक्षा आसानी से चीजों को सीख रहे हैं. उन्हें रोज आंगनबाड़ी आना अच्छा लग रहा है. आंगनबाड़ी सेविका मेरी लकड़ा बताती हैं कि दीवार पर जो चीजें लिखी और बनायी गयी हैं, उसे पढ़ने में बच्चों को अच्छा लगता है. बच्चों का समय आंगनबाड़ी केंद्र में कैसे बीत जाता है, उन्हें पता ही नहीं चलता है. आंगनबाड़ी केंद्र में ग्रामीणों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के लिए कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है. इस बार यहां पर स्तनपान दिवस मनाया गया. इस दौरान स्तनपान करानेवाली महिलाओं और माताओं को स्तनपान के फायदे बताये गये. उन्हें बताया गया कि मां का दूध बच्चे के लिए सबसे ज्यादा फायदेमंद है. जिन बच्चों ने पहली बार बाहरी भोजन किया, उनका अन्नप्रासन्न किया गया. बच्चों के लिए पौष्टिक आहार की जानकारी दी गयी. केंद्र में गर्भवती महिलाओं की जांच भी की जाती है. उन्हें मुफ्त में दवाइयां और स्वस्थ रहने के लिए बेहतर खानपान के तरीके बताये जाते हैं. किशोरियों को भी यहां पर स्वास्थ्य सलाह दी जाती है. इस तरह से यह मॉडल आंगनबाड़ी गांव के बच्चे, महिलाएं और किशोरियों के स्वास्थ्य का पूरा ध्यान रख रहा है.

epaper.panchayatnama.com